



KVS – TGT

विशेष शिक्षक

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS)

भाग - 1

मानव वृद्धि और विकास एवं सीखना, सिखाना और मूल्यांकन



INDEX

S.N.	Content	P.N.
मानव वृद्धि और विकास		
1.	मानव विकास की नींव	1
2.	मानव विकास के तरीके: क्लासिकल तरीके	6
3.	मानव विकास के तरीके: आधुनिक और एकीकृत तरीके	10
4.	विकास के सैद्धांतिक दृष्टिकोण: संज्ञानात्मक विकास	15
5.	सैद्धांतिक दृष्टिकोण: मनो-सामाजिक, नैतिक और व्यक्तित्व विकास	19
6.	शारीरिक और मोटर विकास (जन्म से 8 वर्ष तक)	24
7.	कॉग्निटिव, भाषा और इमोशनल डेवलपमेंट (जन्म से 8 साल तक)	31
8.	प्रारंभिक बचपन शिक्षा (ECCE) और विशेष शैक्षिक आवश्यकताएं (0-8 वर्ष)	37
9.	शुरुआती किशोरावस्था: शारीरिक और न्यूरोडेवलपमेंट (9-18 साल)	44
10.	किशोरावस्था में संज्ञानात्मक, नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास (9-18 वर्ष)	49
11.	वयस्कता में बदलाव: सामाजिक, भावनात्मक और पहचान का विकास	55
12.	वयस्कता में बदलाव के दौरान व्यावसायिक, शैक्षिक और व्यावसायिक विकास	60
13.	दिव्यांग बच्चों के लिए ट्रांज़िशन प्लानिंग (किशोरावस्था के आखिर से वयस्कता तक)	66
14.	मानव विकास में समकालीन मुद्दे	73
15.	पूरी यूनिट के इंटीग्रेटेड, डीप रिविज़न नोट्स: ह्यूमन ग्रोथ और डेवलपमेंट	79
सीखना, सिखाना और मूल्यांकन		
16.	मानव शिक्षा: अर्थ, प्रकृति और विशेषताएँ	86
17.	मानव अधिगम की व्यवहारवादी नींव	92
18.	सीखने की संज्ञानात्मक और मानवतावादी नींव	95
19.	इंटेलिजेंस: अर्थ, प्रकृति और सैद्धांतिक आधार	99
20.	बुद्धि का मापन	104
21.	सीखने की प्रक्रिया: चरण, तंत्र और संज्ञानात्मक संचालन	108
22.	मोटिवेशन: मतलब, नेचर और टाइप	113
23.	प्रेरणा के सिद्धांत	118
24.	क्लासरूम मोटिवेशन प्रोसेस और टीचर की भूमिका	123
25.	सीखने पर व्यवहारिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक दृष्टिकोण	128
26.	संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांत	133

27.	टीचिंग-लर्निंग प्रोसेस: मतलब, सिद्धांत और क्लासरूम डायनामिक्स	138
28.	शिक्षण कौशल और योग्यताएँ	143
29.	पढ़ाने के तरीके: पारंपरिक, आधुनिक और सबको साथ लेकर चलने वाले तरीके	148
30.	टीचिंग-लर्निंग प्रोसेस में टीचर की प्रोफेशनल भूमिकाएँ	159
31.	कक्षा संचार और बातचीत	165
32.	कक्षा अनुशासन और व्यवहार प्रबंधन	170
33.	असेसमेंट: मतलब, ज़रूरत और टाइप	175
34.	समावेशी शिक्षा में मूल्यांकन	180
35.	मनोवैज्ञानिक परीक्षण और स्कूल-आधारित मूल्यांकन	185
36.	मूल्यांकन नीतियाँ और स्कूल प्रणाली	190
37.	प्रतिक्रिया, दस्तावेज़ीकरण और नैतिक मूल्यांकन अभ्यास	195
38.	मूल्यांकन रणनीतियाँ और निर्देशात्मक संरेखण	200
39.	निर्देशात्मक रणनीतियाँ और सर्वोत्तम कक्षा अभ्यास	206

मानव वृद्धि और विकास

मानव विकास की नींव

1. मानव विकास और वृद्धि का अर्थ

- इंसान की ग्रोथ और डेवलपमेंट का मतलब है गर्भधारण से लेकर मौत तक इंसान में होने वाले **सिस्टमैटिक, व्यवस्थित और बढ़ते हुए बदलाव**। ग्रोथ का मतलब है **शरीर में होने वाले क्वांटिटेटिव बदलाव**, जबकि डेवलपमेंट में फिजिकल, कॉग्निटिव, इमोशनल, लिंग्विस्टिक और सोशल डोमेन में **क्वालिटेटिव बदलाव शामिल हैं**। यह प्रोसेस **ज़िंदगी भर चलने वाला, मल्टीडायमेंशनल, मल्टीडायरेक्शनल होता है, और बायोलॉजिकल मैच्योरिटी, एनवायरनमेंट और कल्चरल कॉन्टेक्स्ट** से बहुत ज़्यादा प्रभावित होता है।

मॉडर्न डेवलपमेंटल साइकोलॉजी इंसानी विकास को इस तरह देखती है:

- होलिस्टिक** - शरीर, मन, भावनाओं और सामाजिक कामकाज को एक साथ लाना
- डायनामिक** - पर्यावरण के साथ इंटरैक्शन के ज़रिए लगातार बदलता रहता है
- प्रासंगिक** - परिवार, स्कूल, समुदाय, संस्कृति में शामिल
- कुल मिलाकर** - शुरुआती अनुभव बाद की राहें तय करते हैं
- व्यक्तिगत** - विकास की गति बहुत अलग-अलग होती है

स्पेशल एजुकेशन में, डेवलपमेंट को **अलग-अलग तरह का और नॉन-लीनियर समझा जाता है**, जिसके लिए अक्सर दिव्यांग बच्चों (CWSN) के लिए **पर्सनल सपोर्ट और अडैप्टेबल माहौल की ज़रूरत होती है**।

2. वृद्धि बनाम विकास

आधार	विकास	विकास
प्रकृति	मात्रात्मक वृद्धि (आकार, ऊंचाई, वजन)	गुणात्मक परिवर्तन (कौशल, योग्यता, सोच)
दायरा	शारीरिक परिवर्तनों तक सीमित	कॉग्निटिव, भाषा, इमोशनल, नैतिक, सोशल डोमेन को कवर करता है
दिशा	औसत दर्जे का	सटीक रूप से मापना मुश्किल है
अवधि	शारीरिक परिपक्वता तक होता है	जीवन भर होता है
उदाहरण	ऊंचाई बढ़ना	तर्क या सहानुभूति का विकास

स्पेशल एजुकेशन में, दोनों कॉन्सेप्ट में अंतर करने से **डेवलपमेंटल डिले का पता लगाने में मदद मिलती है**, खासकर मोटर, भाषा या कॉग्निटिव एरिया में।

3. मानव विकास की विशेषताएं

मानव विकास वैज्ञानिक रूप से स्थापित विशेषताओं का पालन करता है:

1. विकास जीवन भर चलता है

- जन्म से पहले के जीवन से लेकर बुढ़ापे तक, हर स्टेज का अपना अलग योगदान होता है।

2. विकास बहुआयामी है

इसमें शामिल हैं:

- जैविक (मस्तिष्क, संवेदी प्रणालियाँ)
- संज्ञानात्मक (स्मृति, तर्क, समस्या-समाधान)
- भावनात्मक (नियमन, लगाव)
- सामाजिक (रिश्ते, संचार)

3. विकास बहुआयामी है

- कुछ एबिलिटीज़ बेहतर होती हैं (वोकैबुलरी), कुछ कम होती हैं (प्रोसेसिंग स्पीड)।

4. विकास में लचीलापन होता है

- ट्रेनिंग, माहौल, सपोर्ट और रिहैबिलिटेशन से काबिलियत को बनाया जा सकता है - जो स्पेशल एजुकएटर के इंटरवेंशन के लिए ज़रूरी है।

-
5. **विकास प्रासंगिक है**
संदर्भों में शामिल हैं:
- पारिवारिक संरचना
 - स्कूल का वातावरण
 - सांस्कृतिक मान्यताएँ
 - सामाजिक-आर्थिक स्थिति
6. **विकास क्रमिक और पूर्वानुमानित है**
माइलस्टोन एक क्रम में होते हैं:
- बैठना → रेंगना → खड़ा होना → चलना
 - बड़बड़ाना → शब्द → वाक्यांश → वाक्य
7. **व्यक्तिगत अंतर मौजूद हैं**
- इंडिविजुअलाइज्ड एजुकेशन प्लान (IEPs) के लिए ज़रूरी।
4. **मानव विकास के सिद्धांत**
1. **सेफलोकेडल सिद्धांत**
- विकास सिर से पैर की ओर होता है।
 - उदाहरण: बच्चे चलने से पहले सिर पर कंट्रोल करना सीखते हैं।
2. **प्रॉक्सिमोडिस्टल सिद्धांत**
- विकास शरीर के सेंटर से बाहर की ओर होता है।
 - उदाहरण: कंधा → बाजू → हाथ → उंगलियाँ।
3. **सामान्य से विशिष्ट विकास**
- बच्चे सटीक स्किल से पहले बड़ी मसल्स पर कंट्रोल करना सीखते हैं।
 - उदाहरण: पहले पूरे हाथ से पकड़ना → बाद में पिसर से पकड़ना।
4. **सतत और संचयी**
- हर स्टेज पिछले अनुभवों पर आधारित होता है।
5. **बदलावों के साथ अनुमानित पैटर्न**
- यह क्रम स्थिर है, लेकिन बच्चों में समय अलग-अलग हो सकता है।
6. **आनुवंशिकता और पर्यावरण का परस्पर संबंध**
- प्रकृति और परवरिश दोनों ही पूरे विकास पर असर डालते हैं।
7. **विकास की विभेदक दर**
- अलग-अलग डोमेन अलग-अलग रेट से आगे बढ़ते हैं।
 - स्पेशल एजुकेटर्स के लिए, ये प्रिंसिपल्स **स्क्रीनिंग**, **असेसमेंट** और **इंटरवेंशन प्लानिंग** को गाइड करते हैं।
5. **मानव विकास को प्रभावित करने वाले कारक**
विकास कई डिटरमिनेंट्स के इंटरैक्शन से होता है:
- A. **जैविक कारक**
- आनुवंशिक श्रृंगार
 - प्रसवपूर्व वातावरण (पोषण, टेराटोजेन्स)
 - जन्म संबंधी जटिलताएँ
 - तंत्रिका-विकासात्मक स्वास्थ्य
 - हार्मोनल प्रभाव
- क्रोमोसोमल असामान्यताएँ (जैसे डाउन सिंड्रोम) या मेटाबोलिक डिसऑर्डर वाले बच्चों में अक्सर विकास में देरी होती है।
- B. **पर्यावरणीय कारक**
- पारिवारिक वातावरण
 - पोषण
 - आवास की स्थिति
 - स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच
 - पालन-पोषण की शैलियाँ
- गर्म, रिस्पॉन्सिव माहौल सोशियो-इमोशनल ग्रोथ के लिए ज़रूरी सिक्वोर अटैचमेंट को बढ़ावा देता है।
-

C. सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

- भाषा, परंपराएँ, मूल्य
- सामाजिक अपेक्षाएँ
- सामुदायिक मानदंड
- सांस्कृतिक बाल-पालन प्रथाएँ

कल्चर, आज़ादी, सहयोग और कम्युनिकेशन जैसे डेवलपमेंट के माइलस्टोन पर असर डालता है।

D. आर्थिक कारक

- गरीबी और अभाव
- सीखने के संसाधनों तक पहुँच
- शैक्षिक अवसर

कम SES का खराब कॉग्निटिव और एकेडमिक नतीजों से गहरा संबंध है।

E. शैक्षिक कारक

- स्कूल की गुणवत्ता
- शिक्षक योग्यता
- पाठ्यक्रम
- सहकर्मी बातचीत
- विशेष शिक्षा सहायता

शिक्षा कॉग्निटिव डेवलपमेंट और भविष्य के जीवन के नतीजों को आकार देती है।

6. मानव विकास एक आजीवन प्रक्रिया के रूप में स्टेज में शामिल हैं:

- प्रसवपूर्व (गर्भाधान से जन्म तक)
- शैशवावस्था (0-2 वर्ष)
- प्रारंभिक बचपन (3-6 वर्ष)
- मध्य बचपन (7-11 वर्ष)
- किशोरावस्था (12-18 वर्ष)
- वयस्कता (18+)
- पौढ़ अवस्था

स्पेशल एजुकेटर अक्सर बचपन से लेकर टीनएज तक पर फोकस करते हैं, और इन फेज में सीखने की अलग-अलग ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

7. विकास की समग्र प्रकृति

होलिस्टिक डेवलपमेंट कई डोमेन को जोड़ता है:

1. शारीरिक विकास

- मोटर कौशल
- संवेदी क्षमताएँ
- मस्तिष्क की वृद्धि

2. संज्ञानात्मक विकास

- याद
- समस्या को सुलझाना
- तर्क
- ध्यान

3. भाषा विकास

- शब्दावली
- व्याकरण
- उपयोगितावाद

4. भावनात्मक विकास

- भावनाओं का विनियमन
- स्व अवधारणा

5. सामाजिक विकास

- बातचीत के पैटर्न

- सहकर्मि संबंध
- सहयोग

इंटरडिसिप्लिनरी तरीके (स्पीच थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी, बिहेवियर थेरेपी) स्पेशल ज़रूरतों वाले बच्चों के होलिस्टिक डेवलपमेंट में मदद करते हैं।

8. डेवलपमेंट कॉन्टेक्स्टुअल है (ब्रॉफेनब्रेनर का सपोर्ट)

मानव विकास कई लेयर से प्रभावित होता है:

- **माइक्रोसिस्टम:** परिवार, स्कूल
- **मेसोसिस्टम:** घर और स्कूल के बीच इंटरैक्शन
- **एक्सोसिस्टम:** सामुदायिक संसाधन
- **मैक्रोसिस्टम:** संस्कृति, नियम
- **क्रोनोसिस्टम:** समय-आधारित परिवर्तन

यह सबको साथ लेकर चलने वाली शिक्षा के लिए सपोर्टिव इकोसिस्टम के महत्व को दिखाता है।

9. एजुकेशनल असर वाले डेवलपमेंटल डोमेन

A. शारीरिक और मोटर विकास

मोटर कोऑर्डिनेशन सीधे तौर पर प्रभावित करता है:

- कक्षा में भागीदारी
- लिखना
- स्वयं सहायता कौशल

ऑक्यूपेशनल थेरेपी मोटर डिले वाले बच्चों की मदद करती है।

B. संज्ञानात्मक विकास

प्रभाव:

- सीखने की गति
- समस्या को सुलझाना
- शैक्षिक उपलब्धि

स्पेशल एजुकएटर इन चीज़ों का इस्तेमाल करके निर्देश तैयार करते हैं:

- गतिविधि-आधारित शिक्षा
- ठोस से अमूर्त पदानुक्रम
- दृश्य समर्थन

C. भाषा विकास

भाषा में देरी से रुकावटें:

- साक्षरता
- सामाजिक संपर्क
- कक्षा में सहभागिता

ASD, HI, SLD के लिए स्पीच-लैंग्वेज थेरेपी बहुत ज़रूरी है।

D. भावनात्मक और सामाजिक विकास

इमोशनल मुश्किलों की वजह से ये होता है:

- व्यवहार संबंधी समस्याएं
- सहकर्मि अस्वीकृति
- कम आत्म सम्मान

स्पेशल एजुकएटर इन तरीकों से मदद करते हैं:

- व्यवहारिक हस्तक्षेप
- सामाजिक कौशल प्रशिक्षण

10. विकास और विकलांगता

- डेवलपमेंटल फ्रेमवर्क के अंदर डिसेबिलिटी को समझना ज़रूरी है।

1. बौद्धिक अक्षमता (ID)

- धीमी संज्ञानात्मक वृद्धि
- विलंबित मोटर और भाषा विकास
- स्किल-बेस्ड, स्ट्रक्चर्ड टीचिंग की ज़रूरत

2. ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)

- विलंबित सामाजिक संचार
- प्रतिबंधित व्यवहार
- असामान्य संवेदी प्रतिक्रियाएँ

इसके लिए जल्दी दखल और स्ट्रक्चर्ड बिहेवियरल प्रोग्राम की ज़रूरत है।

3. स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटीज़ (SLD)

- सामान्य बुद्धि लेकिन पढ़ने, लिखने, गणित में कठिनाई
- इन्फॉर्मेशन-प्रोसेसिंग समस्याओं से जुड़ा हुआ इंस्ट्रक्शन में मल्टीसेंसरी टीचिंग शामिल है।

4. एडीएचडी

- ध्यान, आवेगशीलता से जुड़ी समस्याएं
 - कार्यकारी कार्य कठिनाइयाँ
- बिहेवियर थेरेपी और क्लासरूम में बदलाव ज़रूरी हैं।

5. सेंसरी डिसेबिलिटीज़ (HI/VI)

- HI भाषा विकास को प्रभावित करता है
 - VI स्थानिक जागरूकता, गतिशीलता को प्रभावित करता है
- असिस्टिव टेक्नोलॉजी पार्टिसिपेशन को मुमकिन बनाने में अहम भूमिका निभाती है।

11. माइलस्टोन और डेवलपमेंटल असेसमेंट

- माइलस्टोन डेवलपमेंट में होने वाली देरी को स्क्रीन करने में मदद करते हैं।

डोमेन में शामिल हैं:

- सकल मोटर
- फ़ाइन मोटर
- भाषा
- संज्ञानात्मक
- सामाजिक

उपकरणों का इस्तेमाल:

- विकासात्मक चेकलिस्ट
- कार्यात्मक मूल्यांकन
- अवलोकनात्मक आकलन

KVS/NVS स्पेशल एजुकएटर रोल में, एजुकएटर को रेड फ्लैग्स को जल्दी पहचानना चाहिए।

12. स्पेशल एजुकेशन में ह्यूमन डेवलपमेंट को समझने की ज़रूरत स्पेशल एजुकेटर्स को ये करना होगा:

1. विकास में देरी की पहचान करें

- माइलस्टोन, स्क्रीनिंग टूल्स का इस्तेमाल करना।

2. पर्सनलाइज़्ड इंटरवेंशन प्लान करें

- IEP लक्ष्यों के साथ अलाइन्ड।

3. पढ़ाने के तरीकों में बदलाव करें

- कॉग्निटिव और इमोशनल डेवलपमेंट पर आधारित।

4. समग्र विकास में मदद करें

- माता-पिता और स्पेशलिस्ट के साथ मिलकर काम करके।

5. व्यवहार के पैटर्न को समझें

- डेवलपमेंट स्टेज के आधार पर।

6. समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दें

- आसान लर्निंग माहौल बनाना।

**13. एजुकेशनल प्रैक्टिस के लिए लाइफ़लॉन्ग इम्प्लीकेशन्स
ह्यूमन डेवलपमेंट की जानकारी टीचरों की मदद करती है:**

- यथार्थवादी अपेक्षाएँ निर्धारित करें
- सीखने के पैटर्न का अनुमान लगाएं
- शैक्षणिक विफलता को रोकें
- भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याओं का समाधान
- मजबूत अभिभावक-स्कूल साझेदारी बनाएं
- समावेशी अनुदेशात्मक डिज़ाइन को बेहतर बनाएँ

मानव विकास के तरीके: क्लासिकल तरीके

- इंसानी विकास को अलग-अलग क्लासिकल नज़रिए से समझा गया है, जिनमें से हर एक में विकास को आकार देने वाली अलग-अलग ताकतों पर ज़ोर दिया गया है। ये तरीके मॉडर्न डेवलपमेंटल साइकोलॉजी की नींव बनाते हैं और एजुकेशनल और स्पेशल एजुकेशन के तरीकों को गाइड करते हैं। इन्हें समझने से टीचर्स को अच्छे सीखने के अनुभव डिज़ाइन करने, नॉर्मल डेवलपमेंट में होने वाली कमियों को पहचानने और विकलांग बच्चों (CWSN) के लिए अलग-अलग तरीके अपनाने में मदद मिलती है।

इस भाग में **मुख्य क्लासिकल तरीकों को शामिल किया गया है :**

1. परिपक्वता दृष्टिकोण (अर्नोल्ड गेसेल)
2. व्यवहारवादी दृष्टिकोण (वाटसन, स्किनर, बंडुरा)
3. मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण (फ्रायड, एरिकसन)
4. नैतिक दृष्टिकोण (लॉरेंज़, बोल्बी)
5. मानवतावादी दृष्टिकोण (मास्लो, रोजर्स)
6. रचनावादी दृष्टिकोण (पियाजे, वायगोत्स्की, ब्रूनर)

हर तरीका डेवलपमेंट प्रोसेस में खास जानकारी देता है और क्लासरूम में सबको साथ लेकर चलने के तरीकों के बारे में बताता है।

1. मैच्योरेशनल अप्रोच (अर्नोल्ड गेसेल)

गेसेल का तरीका डेवलपमेंट के मुख्य ड्राइवर के तौर पर **बायोलॉजिकल मैच्योरिटी पर फोकस करता है। उन्होंने तर्क दिया कि डेवलपमेंट फिक्स्ड, प्रेडिक्टेबल सीक्वेंस में होता है** जो काफी हद तक जेनेटिक पैटर्न से तय होता है।

प्रमुख सिद्धांत

1. मैच्योरिटी जन्मजात होती है

- विकास जेनेटिकली पहले से तय टाइमटेबल के हिसाब से होता है - जैसे बैठना, रेंगना, चलना - चाहे माहौल में कोई भी हलचल हो।

2. अनुक्रमिक पैटर्न

गेसेल ने **साइक्लिक पैटर्न का प्रस्ताव दिया**, जिसमें रेगुलैरिटीज़ देखी गईं:

- मोटर कौशल
- समाज में व्यवहार
- अनुकूली व्यवहार
- भाषा

3. व्यक्तिगत अंतर

- हालांकि सीक्वेंस यूनिवर्सल हैं, लेकिन डेवलपमेंट की **रेट अलग-अलग होती है।**

4. ग्रोथ ग्रेडिएंट्स

- विकास सेफ़लोकॉडल और प्रॉक्सिमोडिस्टल दिशा में होता है - बायोलॉजिकल नियमों के अनुसार।

5. मानक दृष्टिकोण

- गेसेल ने **माइलस्टोन और डेवलपमेंटल शेड्यूल शुरू किए**, जिनका इस्तेमाल देरी की पहचान करने के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ

- विकासात्मक रूप से उपयुक्त अभ्यास (डीएपी)
- उम्र के हिसाब से असली उम्मीदें
- विकास में देरी की जांच के लिए उपयोगी
- स्पेशल एजुकेशन में जल्दी पहचान की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया

कमी: माहौल और सीखने के असर को कम आंकना।

2. व्यवहारवादी दृष्टिकोण

- अंदरूनी प्रोसेस के बजाय, **माहौल के साथ बातचीत से सीखने** का नतीजा मानता है।

A. जॉन बी. वॉटसन - क्लासिकल कंडीशनिंग

- वॉटसन का मानना था कि सभी व्यवहार सीखे जाते हैं। जुड़ाव के ज़रिए, बच्चे इमोशनल और बिहेवियरल रिस्पॉन्स डेवलप करते हैं।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- उत्तेजना → प्रतिक्रिया
- जोड़ी बनाकर सीखना
- भावनात्मक कंडीशनिंग (जैसे, सीखने का डर)

विशेष शिक्षकों के लिए निहितार्थ

- व्यवहार संशोधन रणनीतियाँ
- आदत और असंवेदनशीलता
- नए अनुकूल व्यवहारों की कंडीशनिंग

B. बी. एफ. स्किनर - ऑपरेट कंडीशनिंग

- व्यवहार को आकार देने में **मज़बूती** और **सज़ा** की भूमिका पर ज़ोर दिया।

सुदृढीकरण के प्रकार

- **पॉजिटिव रीइन्फोर्समेंट** : रिवॉर्ड (तारीफ, टोकन)
- **नेगेटिव रीइन्फोर्समेंट** : खराब स्टिमुलस को हटाना

सज़ा

- गलत व्यवहार को कम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, हालांकि यह सबको साथ लेकर चलने वाली जगहों पर सीमित है।

सुदृढीकरण की अनुसूचियां

- निरंतर
- निश्चित/परिवर्तनीय अंतराल
- निश्चित/परिवर्तनीय अनुपात

शैक्षिक निहितार्थ

- टोकन अर्थव्यवस्था प्रणालियाँ
- व्यवहार अनुबंध
- कार्य विश्लेषण
- कार्यात्मक व्यवहार सिखाना
- कक्षा प्रबंधन

स्किनर के सिद्धांत **ADHD, ASD, व्यवहार संबंधी समस्याओं** वाले बच्चों के लिए ज़रूरी हैं।

C. अल्बर्ट बंडुरा - सोशल लर्निंग थ्योरी

- बंडुरा ने यह विचार पेश किया कि सीखना सिर्फ मज़बूती से नहीं, बल्कि **देखने और नकल करने से होता है**।

मुख्य तत्व

- मोडलिंग
- ध्यान, अवधारण, पुनरुत्पादन, प्रेरणा
- प्रतिनिधिक सुदृढीकरण

बोबो गुड़िया प्रयोग

- यह साबित हुआ कि बच्चे देखे गए व्यवहार की नकल करते हैं।

शैक्षिक और विशेष शिक्षा निहितार्थ

- शिक्षकों द्वारा सकारात्मक मॉडलिंग
- सहकर्मी-मध्यस्थ हस्तक्षेप
- सामाजिक कौशल प्रशिक्षण
- व्यवहार पूर्वाभ्यास

बंडुरा कॉग्निटिव और बिहेवियरल एलिमेंट्स को जोड़ते हैं, जिससे उनकी थ्योरी बड़े पैमाने पर लागू होती है।

3. मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

- साइकोएनालिटिक थ्योरिस्ट **अनजाने मकसद**, **शुरुआती अनुभवों** और **इमोशनल डेवलपमेंट** पर ज़ोर देते हैं।

A. सिगमंड फ्रायड - साइकोसेक्सुअल थ्योरी

- फ्रायड ने कहा कि विकास साइकोसेक्सुअल झगड़ों को सुलझाने के आधार पर स्टेज से आगे बढ़ता है।

मुख्य चरण

1. **ओरल (0-1 वर्ष)** - खिलाना, चूसना
2. **गुदा (1-3 साल)** - शौचालय प्रशिक्षण
3. **लिंग (3-6 साल)** - लिंग पहचान, ओडिपस/इलेक्टा
4. **लेटेंसी (6-12 साल)** - सोशल और एकेडमिक फोकस
5. **जेनिटल (12+ साल)** - मैच्योर रिश्ते

शैक्षिक निहितार्थ

- बचपन के शुरुआती अनुभवों का महत्व
- भावनात्मक सुरक्षा की भूमिका
- अंदरूनी झगड़ों में मौजूद व्यवहार से जुड़ी समस्याओं को समझना

B. एरिक एरिकसन - मनोसामाजिक सिद्धांत

- फ्रायड के विचारों को **आठ स्टेज** वाले **लाइफस्पैन मॉडल में बढ़ाता है**, जिनमें से हर एक एक साइकोसोशल संकट दिखाता है।

KVS/NVS से जुड़े मुख्य चरण

- विश्वास बनाम अविश्वास (0-1 वर्ष)
- ऑटोनॉमी बनाम शर्म (1-3 साल)
- पहल बनाम अपराधबोध (3-6 साल)
- इंडस्ट्री बनाम इनफीरियरिटी (6-12 साल)
- पहचान बनाम भूमिका कन्फ्यूजन (12-18 साल)

शैक्षिक निहितार्थ

- विकल्पों के माध्यम से स्वायत्तता का निर्माण
- क्रिएटिव कामों के साथ पहल को बढ़ावा देना
- महारत के अनुभवों के ज़रिए इंडस्ट्री का विकास
- किशोरावस्था में पहचान बनाने में मदद करना
- भावनात्मक गड़बड़ी को समझना

एरिकसन काउंसलिंग और इनक्लूसिव क्लासरूम स्ट्रेटेजी के बारे में बहुत जानकारी देते हैं।

4. नैतिक दृष्टिकोण

- एथोलॉजी इवोल्यूशनरी और बायोलॉजिकल कॉन्टेक्ट में व्यवहार की जांच करती है।

A. कोनराड लोरेज़ - इम्प्रिंटिंग

- लोरेज़ ने स्टीडी की कि छोटे जानवर कैसे तुरंत अटैचमेंट बनाते हैं।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- महत्वपूर्ण अवधि
- अपरिवर्तनीय लगाव पैटर्न

B. जॉन बोल्बी - अटैचमेंट थ्योरी

- बोल्बी ने एथोलॉजिकल सिद्धांतों को इंसानी बच्चों पर लागू किया।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- लगाव की सहज आवश्यकता
- सुरक्षित, चिंतित, बचने वाला लगाव
- आंतरिक कार्य मॉडल
- विभाजन की उत्कण्ठा
- मातृत्व अभाव

शैक्षिक निहितार्थ

- सुरक्षित रिश्तों का महत्व
- सीखने के लिए भावनात्मक सुरक्षा
- खराब अटैचमेंट में सोशियो-इमोशनल दिक्कतों का खतरा
- क्लासरूम में एक जैसा, गर्म माहौल बनाना

ASD, ट्रॉमा या नेग्लेक्ट वाले बच्चों में अक्सर अटैचमेंट डेविएशन दिखाता है।

5. मानवतावादी दृष्टिकोण

- मानवतावादी सिद्धांत **आत्म-साक्षात्कार**, स्वतंत्र इच्छा और जन्मजात अच्छाई पर ज़ोर देते हैं।

A. अब्राहम मास्लो - ज़रूरतों का पदानुक्रम

- मास्लो ने कहा कि लोगों को हायर-लेवल ग्रोथ से पहले **लोअर-ऑर्डर की ज़रूरतें पूरी करनी चाहिए**।

स्तरों

1. शारीरिक
2. सुरक्षा
3. प्यार और अपनापन
4. आदर
5. आत्म-

शैक्षिक निहितार्थ

- बच्चा सुरक्षा और अपनेपन के बिना नहीं सीख सकता
- भावनात्मक माहौल सीखने को प्रभावित करता है
- सम्मान और स्वीकृति जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं

यह खास तौर पर उन दिव्यांग बच्चों के लिए ज़रूरी है जिन्हें इमोशनल सिक्योरिटी की ज़रूरत होती है।

B. कार्ल रोजर्स - व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण

रोजर्स ने ज़ोर दिया:

- बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
- समानुभूति
- अनुरूपता

ये सिद्धांत **समावेशी शिक्षा को आकार देते हैं**, बिना किसी भेदभाव के समर्थन और व्यक्तिगत विकास पर ज़ोर देते हैं।

6. रचनावादी दृष्टिकोण

- कंस्ट्रक्टिविज़्म सीखने वालों को **ज्ञान के एक्टिव कंस्ट्रक्टर के रूप में देखता है**।

A. जीन पियाजे - संज्ञानात्मक रचनावाद

बच्चे आस-पास के माहौल के साथ बातचीत और सोचने-समझने की प्रक्रियाओं से बढ़ते हैं, जैसे:

- आत्मसात
- आवास
- संतुलन

स्टेज हैं:

1. ज्ञानेन्द्रिय
2. पूर्व-संचालन
3. यथार्थ में चालू
4. औपचारिक परिचालन

आशय

- व्यावहारिक शिक्षा
- ठोस से अमूर्त अनुक्रम
- खोज सीखना
- सहकर्मी बातचीत

अलग-अलग तरह की सीखने की ज़रूरतों वाले स्टूडेंट्स के लिए खास तौर पर उपयोगी।

B. लेव वायगोत्स्की - सामाजिक-सांस्कृतिक रचनावाद

- सामाजिक बातचीत और सांस्कृतिक साधनों पर ध्यान केंद्रित किया**।

मूल अवधारणाएँ

- समीपस्थ विकास क्षेत्र (ZPD)
- मचान
- निजी भाषण
- संस्कृति और भाषा की भूमिका

आशय

- सहयोगात्मक शिक्षण
 - सहकर्मि ट्यूटोरिंग
 - शिक्षक एक सुविधाकर्ता के रूप में
 - सहायक तकनीक का इस्तेमाल मंचान के तौर पर
- इनक्लूसिव क्लासरूम के लिए बहुत काम का।

C. जेरोम ब्रूनर - डिस्कवरी लर्निंग

ब्रूनर ने रिप्रेजेंटेशन के तीन तरीके सुझाए:

- सक्रिय (कार्रवाई-आधारित)
- आइकॉनिक (छवि-आधारित)
- प्रतीकात्मक (भाषा-आधारित)

शैक्षिक निहितार्थ

- सर्पिल पाठ्यक्रम
- संरचित खोज
- निर्देशित शिक्षण

ब्रूनर के विचार अलग-अलग तरह के इंस्ट्रक्शन का समर्थन करते हैं।

7. क्लासिकल तरीकों की तुलना

दृष्टिकोण	केंद्र	ताकत	परिसीमन
परिपक्वता संबंधी	जीवविज्ञान	मील के पथर	सीखने की उपेक्षा करता है
व्यवहारवादी	पर्यावरण	व्यवहार को आकार देना	अत्यधिक यांत्रिक
मनो	भावनाएँ	गहरी अंतर्दृष्टि	परीक्षण करना कठिन
नैतिक	विकास	अनुलग्नक अंतर्दृष्टि	प्रारंभिक वर्षों तक सीमित
मानववादी	आत्म विकास	बाल केंद्रित	बहुत आदर्शवादी
रचनावादी	सक्रिय अध्ययन	समृद्ध शिक्षण डिजाइन	बहुत समय लगेगा

8. स्पेशल एजुकेशन में अप्रोच का इस्तेमाल

1. परिपक्वता

- देरी की पहचान
- यथार्थवादी विकासात्मक अपेक्षाएँ निर्धारित करना

2. व्यवहारवादी

- व्यवहार संशोधन कार्यक्रम
- ASD, ADHD में फंक्शनल बिहेवियर की ट्रेनिंग

3. मनोविश्लेषणात्मक

- व्यवहार की भावनात्मक जड़ों को समझना
- सुरक्षित शिक्षक-बच्चे संबंधों का समर्थन करना

4. नैतिक

- लगाव संबंधी गड़बड़ी को ठीक करना
- पूर्वानुमानित वातावरण बनाना

5. मानवतावादी

- स्वीकृति और अपनापन सुनिश्चित करना
- CWSN में आत्म-सम्मान का निर्माण

6. रचनावादी

- गतिविधि-आधारित शिक्षा
- शैक्षणिक कार्यों के लिए मंचान
- व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाएँ

मानव विकास के तरीके: आधुनिक और एकीकृत तरीके

बायोलॉजी, एनवायरनमेंट, कल्चर, कॉग्निशन, न्यूरोसाइकोलॉजी और डायनामिक इंटरैक्शन को मिलाकर क्लासिकल थ्योरीज़ से आगे बढ़ते हैं। ये तरीके आज के रिसर्च के नतीजों को दिखाते हैं और इनक्लूसिव एजुकेशन, अर्ली इंटरवेंशन और स्पेशल नीड्स सपोर्ट में मौजूदा प्रैक्टिस को गाइड करते हैं।

इस चैप्टर में पाँच मुख्य मॉडर्न अप्रोच शामिल हैं:

1. पारिस्थितिक तंत्र दृष्टिकोण (ब्रॉफेनब्रेनर)
2. डायनेमिक सिस्टम्स अप्रोच (एस्थर थेलेन)
3. सूचना-प्रसंस्करण दृष्टिकोण
4. न्यूरोडेवलपमेंटल अप्रोच (एग्जीक्यूटिव फंक्शन और ब्रेन मैच्योरेशन)
5. सांस्कृतिक-ऐतिहासिक दृष्टिकोण (वायगोत्स्की के विस्तार)

हर तरीका इस बारे में हमारी समझ को और गहरा करता है कि बच्चे कैसे बढ़ते हैं, सीखते हैं, खुद को ढालते हैं, और माहौल के हिसाब से कैसे रिस्पॉन्स देते हैं - खासकर KVS/NVS स्कूलों में दिव्यांग बच्चों (CWSN) के लिए।

1. इकोलॉजिकल सिस्टम्स अप्रोच (यूरी ब्रॉफेनब्रेनर)

- ब्रॉफेनब्रेनर ने कहा कि इंसानी विकास कई तरह के, आपस में जुड़े एनवायरनमेंटल सिस्टम से तय होता है। बच्चे रिश्तों, हालात और संस्थाओं के एक मुश्किल इकोसिस्टम में बढ़ते हैं।

A. पारिस्थितिकी तंत्र मॉडल की संरचना

1. माइक्रोसिस्टम

आस-पास के माहौल जहां सीधी बातचीत होती है:

- परिवार
- विद्यालय
- साथियों के समूह
- अड़ोस-पड़ोस
- कक्षा

ज़रूरी बात:

- क्लास का माहौल, टीचर का व्यवहार और माता-पिता का शामिल होना सीखने पर सीधे तौर पर असर डालते हैं।

2. मेसोसिस्टम

माइक्रोसिस्टम के कंपोनेंट्स के बीच इंटरैक्शन:

- घर-विद्यालय संबंध
- शिक्षक-अभिभावक संचार
- सहकर्मी-परिवार का प्रभाव

काम का:

घर-स्कूल के बीच मज़बूत रिश्ते एकेडमिक और सोशल स्किल्स को बेहतर बनाते हैं, खासकर CWSN के लिए।

3. एक्सोसिस्टम

ऐसी सेटिंग्स जो इनडायरेक्टली डेवलपमेंट पर असर डालती हैं:

- माता-पिता का कार्यस्थल
- स्वास्थ्य सेवाएँ
- स्थानीय शासन
- मिडिया

प्रासंगिकता:

- माता-पिता का तनाव या नौकरी में अस्थिरता बच्चे के व्यवहार पर असर डालती है।

4. मैक्रोसिस्टम

बड़े कल्चरल, पॉलिटिकल, सोशल फैक्टर्स:

- सांस्कृतिक मानदंड
- सामाजिक मूल्य
- कानून
- विचारधाराओं
- सरकारी नीतियां

काम की बात:

- सबको साथ लेकर चलने वाली शिक्षा की नीतियां क्लासरूम के कामों पर असर डालती हैं।

5. क्रोनोसिस्टम

समय का आयाम, जिसमें शामिल हैं:

- जीवन में बदलाव (स्कूल में प्रवेश, किशोरावस्था)
- सामाजिक परिवर्तन
- तकनीकी विकास

प्रासंगिकता:

- COVID-19, डिजिटल शिक्षा, NEP-2020 सुधार - सभी विकास को नया आकार देते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

- विकास को अलग से नहीं समझा जा सकता।
- टीचर्स को स्टूडेंट्स के बैकग्राउंड पर ध्यान देना चाहिए।
- माता-पिता का शामिल होना बहुत ज़रूरी है।
- कल्चर-सेंसिटिव पेडागॉजी ज़रूरी है।
- स्कूल की पॉलिसी बच्चों के नतीजों पर असर डालती हैं।
- दखल इकोसिस्टम पर आधारित होना चाहिए, सिर्फ बच्चों पर नहीं।

2. डायनेमिक सिस्टम्स अप्रोच (एस्थर थेलेन)

- यह मॉडर्न तरीका इस बात पर ज़ोर देता है कि विकास बच्चे और माहौल के बीच **खुद से होने वाले इंटरैक्शन से होता है।**

A. मुख्य अवधारणाएँ

1. विकास की अरेखिकता

- डेवलपमेंट फिक्स्ड स्टेज में नहीं होता; इसमें उतार-चढ़ाव, रिग्रेशन और रीऑर्गेनाइजेशन शामिल होते हैं।

2. स्व-संगठन

- बच्चे नए व्यवहार बनाने के लिए सेंसरी, मोटर, कॉग्निटिव और एनवायरनमेंटल इनपुट को इंटीग्रेट करते हैं।

3. सॉफ्ट असेंबली

व्यवहार इन चीज़ों के लचीले मेल से बनता है:

- तंत्रिका परिपक्वता
- शरीर की वृद्धि
- प्रेरणा
- कार्य की मांग
- पर्यावरणीय संकेत

4. परिवर्तनशीलता सामान्य है

- एक्शन में बदलाव (जैसे, अलग-अलग क्रॉलिंग स्टाइल) **अडैप्टिव होते हैं**, प्रॉब्लम वाले नहीं।

विशेष शिक्षा से प्रासंगिकता

- CWSN दूसरे डेवलपमेंटल रास्तों पर निर्भर हो सकते हैं।
- मल्टीसेंसरी थेरेपी मोटर, स्पीच, कॉग्निटिव स्किल्स पर असर डालती है।
- **इंटरैक्शन पैटर्न** पर फोकस होना चाहिए, न कि अलग-अलग स्किल्स पर।
- असिस्टिव टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट के रास्ते बदल देती है।

डायनामिक सिस्टम थ्योरी बताती है कि दिव्यांग बच्चों में **अलग लेकिन सही डेवलपमेंट पैटर्न क्यों दिखते हैं**।

3. सूचना-प्रसंस्करण दृष्टिकोण

- यह तरीका कॉग्निटिव डेवलपमेंट को एक कंप्यूटर सिस्टम जैसा बताता है - जो जानकारी हासिल करने, स्टोर करने और वापस लाने वाले प्रोसेस का इस्तेमाल करता है।

A. मुख्य घटक

1. ध्यान

- चुनकर ध्यान लगाने की क्षमता; ADHD में कमी सीखने पर असर डालती है।

2. धारणा

- अनुभव के आधार पर सेंसरी इनपुट को समझना।

3. एन्कोडिंग

- इनपुट को मेमोरी में बदलना।

4. कार्यशील स्मृति

- एक्टिव प्रोसेसिंग सिस्टम - पढ़ने, मैथ, रीजनिंग से मज़बूती से जुड़ा हुआ।

5. दीर्घकालिक स्मृति

- जमा किया हुआ ज्ञान; रिहर्सल और ऑर्गेनाइजेशन से बेहतर होता है।

6. कार्यकारी कार्य

हायर-ऑर्डर प्रोसेस जो बिहेवियर और सोच को कंट्रोल करते हैं:

- योजना
- निषेध
- संज्ञानात्मक लचीलापन
- निर्णय लेना

B. कॉग्निटिव स्किल्स धीरे-धीरे डेवलप होती हैं

- तेज़ प्रसंस्करण गति
- बेहतर ध्यान नियंत्रण
- उन्नत रणनीति उपयोग
- बेहतर कार्यशील स्मृति
- बेहतर समस्या-समाधान

शैक्षिक निहितार्थ

- स्टेप-बाय-स्टेप स्कैफोल्ड टास्क।
- ग्राफिक ऑर्गेनाइज़र, क्यूज़, प्रॉम्प्ट्स का इस्तेमाल करें।
- याद रखने की स्ट्रेटेजी (चंकिंग, रिहर्सल) सिखाएं।
- स्ट्रक्चर्ड टीचिंग के ज़रिए कॉग्निटिव लोड कम करें।
- SLD या ADHD वाले बच्चों के लिए काम में रुकावट डालें।
- CWSN के लिए रिपीटिशन, सीकेंसिंग, विजुअल एड्स का इस्तेमाल करें।

4. न्यूरोडेवलपमेंटल अप्रोच

इंसानी विकास को अब **ब्रेन मैच्योरिटी**, न्यूरोप्लास्टिसिटी और न्यूरोलॉजिकल प्रोसेस के ज़रिए ज़्यादा समझा जा रहा है।

A. ब्रेन डेवलपमेंट की खास बातें

1. प्रसवपूर्व और प्रारंभिक वर्ष

- तीव्र सिनैप्टोजेनेसिस
- मस्तिष्क अत्यधिक प्लास्टिक
- भाषा, दृष्टि, मोटर कौशल के लिए संवेदनशील अवधि

2. मध्य बचपन

- बेहतर मोटर समन्वय
- प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स में वृद्धि
- कौशल विशेषज्ञता

3. किशोरावस्था

- सिनैप्टिक प्रूनिंग
- माइलिनेशन तंत्रिका संचरण को तेज करता है
- कार्यकारी कार्यों का परिपक्व होना

B. न्यूरोडेवलपमेंटल विकार

- ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार
- एडीएचडी
- डिस्लेक्सिया
- दुष्क्रिया
- बौद्धिक विकलांगता

ये स्थितियाँ इनमें अंतर के कारण उत्पन्न होती हैं:

- तंत्रिका संपर्क
- कार्यकारी कार्य
- क्रियाशील स्मृति
- भाषा मार्ग
- संवेदी प्रसंस्करण

C. न्यूरोप्लास्टिसिटी

- दिमाग की रीऑर्गेनाइज़ और अडैप्ट करने की क्षमता।
- **मतलब:** जल्दी इलाज से बेहतर नतीजे मिलते हैं।

D. कार्यकारी कार्य

इसमें शामिल हैं:

- निषेध
- क्रियाशील स्मृति
- संज्ञानात्मक लचीलापन
- भावनात्मक विनियमन

ADHD, ASD, SLD वाले स्टूडेंट्स में अक्सर EF की कमी दिखती है।

शैक्षिक निहितार्थ

- स्ट्रक्चर्ड रूटीन का इस्तेमाल करें।
 - ASD के लिए विजुअल शेड्यूल।
 - ADHD के लिए बिहेवियरल रीइन्फोर्समेंट।
 - डिस्ट्रेक्सिया के लिए मल्टीसेंसरी टीचिंग।
 - सामाजिक ज्ञान के लिए सामाजिक कहानियाँ।
- न्यूरोसाइंस, इनक्लूसिव एजुकेशन के हिसाब से पर्सनलाइज़्ड टीचिंग को सपोर्ट करता है।

5. सांस्कृतिक-ऐतिहासिक दृष्टिकोण (वायगोत्स्की से परे)

- यह तरीका डेवलपमेंट पर मुख्य असर के तौर पर **कल्चर**, **टूल्स** और **सोशल इंटरैक्शन पर ज़ोर देता है।**

क. मुख्य अवधारणाएँ

1. सांस्कृतिक उपकरण

- भाषा, प्रतीक, परंपराएं सोच के पैटर्न को आकार देती हैं।

2. मध्यस्थता के माध्यम से विकास

- बड़े और साथी बातचीत को गाइड करके सीखने में मदद करते हैं।

3. ज्ञान की सामाजिक उत्पत्ति

- ऊँचे मानसिक काम पहले सामाजिक तौर पर, फिर व्यक्तिगत तौर पर विकसित होते हैं।

4. आंतरिककरण

- बाहरी बातचीत अंदरूनी सोच बन जाती है।

5. गतिविधि सिद्धांत

- सीखना, कल्चर के हिसाब से मतलब वाले कामों में मकसद के साथ जुड़ने से होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

- सीखना कल्चर के हिसाब से ज़रूरी होना चाहिए।
- टीचर सिर्फ जानकारी देने वाला नहीं, बल्कि मीडिएटर का काम करता है।
- बातचीत, सहयोग और बातचीत सीखने को बढ़ावा देते हैं।
- क्लासरूम में अलग-अलग तरह की चीज़ें सीखने के कल्चर को मज़बूत करती हैं।
- पीयर सपोर्ट सिस्टम से इन्क्लूजन को फ़ायदा होता है।

6. आधुनिक तरीकों की तुलना

दृष्टिकोण	मुख्य फोकस	ताकत	परिसीमन
पारिस्थितिक	विकास के संदर्भ	समग्र, पर्यावरणीय	बातचीत को मापना मुश्किल
गतिशील	स्व-संगठन, परिवर्तनशीलता	असल ज़िंदगी के बदलाव के पैटर्न को कैप्चर करता है	जटिल; कम अनुमानित
सूचनाओं का प्रसंस्करण करना	संज्ञानात्मक तंत्र	डिज़ाइन सीखने के लिए उपयोगी	कभी-कभी बहुत ज़्यादा मैकेनिकल
न्यूरोडेवलपमेंटल	मस्तिष्क परिपक्वता	साक्ष्य-आधारित; थेरेपी-प्रासंगिक	चिकित्सा विशेषज्ञता की आवश्यकता है
सांस्कृतिक-ऐतिहासिक	संस्कृति और सामाजिक मध्यस्थता	समावेशी, सहकारी शिक्षा का समर्थन करता है	जीव विज्ञान पर कम ध्यान

7. आधुनिक दृष्टिकोणों का एकीकृत दृश्य

आजकल की स्पेशल और इनक्लूसिव एजुकेशन में, डेवलपमेंट को इनके बीच बातचीत का प्रोडक्ट माना जाता है :

- मस्तिष्क परिपक्वता
- संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं
- सामाजिक संबंध
- सांस्कृतिक उपकरण
- पर्यावरण प्रणालियाँ
- व्यक्तिगत अनुभव
- अनुकूली प्रतिक्रिया लूप

यह इंटीग्रेशन टीचर्स को ऐसे इंटरवेंशन डिज़ाइन करने में मदद करता है जो:

- व्यक्तिगत

- बहुसंवेदी
- संदर्भ के प्रति संवेदनशील
- सहयोगात्मक
- न्यूरोसाइकोलॉजिकल रूप से सूचित

8. KVS/NVS स्पेशल एजुकेशन में एप्लीकेशन

1. पारिस्थितिक दृष्टिकोण

- घर-स्कूल संबंधों को मजबूत करें
- सहायक कक्षा वातावरण सुनिश्चित करें
- सामुदायिक संसाधनों को शामिल करें

2. गतिशील प्रणालियाँ

- खोजपूर्ण सीखने को प्रोत्साहित करें
- विविध संवेदी अनुभव प्रदान करें
- अनुकूली व्यवहार को बढ़ावा देना

3. सूचना-प्रसंस्करण

- चरणबद्ध शिक्षण विधियों का उपयोग करें
- याददाश्त और ध्यान को सपोर्ट करें
- SLD के लिए साफ़ निर्देश दें

4. न्यूरोडेवलपमेंटल

- मस्तिष्क-आधारित शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करें
- EF हस्तक्षेप प्रदान करें
- सहायक तकनीक का उपयोग करें

5. सांस्कृतिक-ऐतिहासिक

- सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण पद्धति का उपयोग करें
- सहकर्मि शिक्षण और सहयोग को बढ़ावा देना
- कॉन्सेप्ट बनाने के लिए मीडिएटेड लर्निंग का इस्तेमाल करें

विकास के सैद्धांतिक दृष्टिकोण: संज्ञानात्मक विकास

सोचने, तर्क करने, याददाश्त, भाषा, प्रॉब्लम सॉल्विंग, ध्यान और फैसले लेने जैसी मानसिक क्षमताओं में बदलाव। कॉग्निटिव डेवलपमेंटल साइकोलॉजी को आकार देने वाले सबसे प्रभावशाली थ्योरिस्ट में शामिल हैं:

1. जीन पियाजे - संज्ञानात्मक रचनावाद
2. लेव वायगोत्स्की - सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत
3. जेरोम ब्रूनर - कॉग्निटिव ग्रोथ और रिप्रेजेंटेशन मोड्स
4. नव-पियाजेटियन दृष्टिकोण (फिशर, केस, पास्कुअल-लियोन)

इन थ्योरीज़ को समझने से स्पेशल एजुकेटर्स को अलग-अलग तरह के स्टूडेंट्स के सीखने के पैटर्न, डेवलपमेंट में देरी और सिखाने की ज़रूरतों को पहचानने में मदद मिलती है।

1. जीन पियाजे - कॉग्निटिव कंस्ट्रक्टिविज्म

- पियाजे ने कहा कि बच्चे पर्यावरण के साथ बातचीत करके एक्टिव रूप से ज्ञान बनाते हैं। विकास सीखने से पहले होता है, और कॉग्निटिव स्ट्रक्चर बायोलॉजिकल मैच्योरिटी और अनुभव की प्रक्रियाओं से विकसित होते हैं।

A. मौलिक प्रक्रियाएँ

1. स्कीमा

- दुनिया को समझने के लिए इस्तेमाल होने वाले मेंटल स्ट्रक्चर या फ्रेमवर्क।

2. आत्मसात

- नए अनुभवों को समझने के लिए मौजूदा स्कीमा का इस्तेमाल करना।
- उदाहरण: गाय को "कुत्ता" कहना क्योंकि दोनों के चार पैर होते हैं।

3. आवास

- जब नई जानकारी फिट न हो तो स्कीमा बदलना।
- उदाहरण: "cow" के लिए नई स्कीमा बनाना।

4. संतुलन

- कॉग्निटिव स्टेबिलिटी पाने के लिए एसिमिलेशन और अकोमोडेशन में बैलेंस बनाना।

5. अनुकूलन

- माहौल में घुलने-मिलने और रहने की पूरी प्रक्रिया।

B. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के चरण

चार इनवेरिएंट स्टेज बताए, जिनमें से हर एक में कालिटेटिव बदलाव थे।

1. सेंसरिमोटर स्टेज (0-2 साल)

प्रमुख विशेषताएँ:

- रिफ्लेक्सिव एक्शन → जानबूझकर किए गए एक्शन
- ऑब्जेक्ट परमानेंस (ऑब्जेक्ट्स अनदेखे होने पर भी मौजूद रहते हैं)
- लक्ष्य-निर्देशित व्यवहार
- प्रतीकात्मक विचार की शुरुआत

प्रासंगिकता:

- विकास में देरी वाले बच्चों में ऑब्जेक्ट परमानेंस में देरी दिख सकती है।

2. प्रीऑपरेशनल स्टेज (2-7 साल)

विशेषताएँ:

- अहंकार (दूसरों के नज़रिए को समझने में मुश्किल)
- जीववाद
- सेंट्रेशन (एक पहलू पर ध्यान देना)
- संरक्षण की कमी (दिखने के बावजूद मात्रा समान रहती है)
- प्रतीकात्मक खेल

स्पेशल एजुकेटर एंगल:

- EGOCENTRISM पढ़ाई पर असर डालता है; मल्टी-सेंसरी और ठोस टीचिंग की ज़रूरत है।

3. कंक्रीट ऑपरेशनल स्टेज (7-11 साल)

विकास:

- संरक्षण (संख्या, द्रव्यमान, आयतन)
- विकेंद्रीकरण
- वर्गीकरण और क्रमांकन
- ठोस घटनाओं के लिए तार्किक सोच
- उलटने अथवा पुलटने योग्यता

काम का:

- मैथ और साइंस फाउंडेशन के लिए सही। SLD वाले बच्चों को सीरियेशन या क्लासिफिकेशन के कामों में दिक्कत हो सकती है।

4. फॉर्मल ऑपरेशनल स्टेज (11+ साल)

योग्यताएँ:

- अमूर्त तर्क
- काल्पनिक सोच
- निगमनात्मक तर्क
- व्यवस्थित समस्या-समाधान

प्रासंगिकता:

- किशोर CWSN को समझने में कठिनाई हो सकती है, जिसके लिए स्कैफोल्डिंग की आवश्यकता होती है।

C. शैक्षिक निहितार्थ

- व्यावहारिक शिक्षण अनुभव प्रदान करें
- कंक्रीट से सेमी-कंक्रीट → एबस्ट्रेक्ट पर जाएं
- अन्वेषण और खोज को प्रोत्साहित करें
- सहकर्मि सहयोग का उपयोग करें
- विकासात्मक तैयारी के लिए पाठ्यक्रम में बदलाव करें

D. आलोचनाएँ

- बच्चों की क्षमताओं को कम आंकना
- जैविक परिपक्वता पर अत्यधिक जोर
- सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभावों को कम आंकना
- चरण बहुत कठोर हैं

2. लेव वायगोत्स्की - सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत

- वायगोत्स्की ने इस बात पर ज़ोर दिया कि कॉग्निटिव डेवलपमेंट सोशल इंटरैक्शन, कल्चर और भाषा से तय होता है। पियाजे के उलट, उन्होंने कहा कि सीखना डेवलपमेंट से पहले होता है।

A. मुख्य अवधारणाएँ

1. समीपस्थ विकास क्षेत्र (ZPD)

- एक बच्चा अकेले क्या कर सकता है और गाइडेंस से क्या हासिल कर सकता है, इसमें अंतर।

2. मचान

- ZPD के अंदर बच्चे को कोई काम करने में मदद करने के लिए बड़ों/साथियों से मिलने वाला सपोर्ट, धीरे-धीरे वापस ले लिया जाता है।

3. सांस्कृतिक उपकरण

- भाषा, सिंबल, संकेत सोच को आकार देते हैं।

4. निजी भाषण

- बच्चों की खुद से बात करने से उनके व्यवहार को रेगुलेट करने में मदद मिलती है; यह अंदरूनी सोच का आधार बनता है।

5. सामाजिक संपर्क

- ज़्यादा जानकारी लोगों के साथ बातचीत से कॉग्निशन डेवलप होता है।

B. शैक्षिक निहितार्थ

- सहयोगी शिक्षण
- सहकर्मि ट्यूटोरिंग
- शिक्षक-निर्देशित संवाद
- सहायता के साथ समस्या-समाधान
- सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्रियों का उपयोग
- सीखने में सामाजिक मध्यस्थता
- समावेशी कक्षाओं के लिए आदर्श

CWSN के लिए प्रासंगिकता:

- स्कैफोल्डिंग और मीडिएटेड लर्निंग SLD, ID, ASD वाले बच्चों के परफॉर्मेंस को बेहतर बनाती है।

C. पियाजे और वायगोत्स्की के बीच अंतर

आधार	पियाजे	भाइगटस्कि
सीखना बनाम विकास	विकास → सीखना	सीखना → विकास
संस्कृति की भूमिका	न्यूनतम	केंद्रीय
सामाजिक संपर्क	माध्यमिक	प्राथमिक
भाषा	अनुभूति का परिणाम	अनुभूति के लिए उपकरण
चरणों	तय	निरंतर

3. जेरोम ब्रूनर - कॉग्निटिव ग्रोथ थ्योरी

- ब्रूनर ने इस बात पर ज़ोर दिया कि कॉग्निटिव डेवलपमेंट रिप्रेजेंटेशन सिस्टम को बढ़ाने और ज्ञान के एक्टिव कंस्ट्रक्शन से होता है।

A. प्रतिनिधित्व के तरीके

1. एनएक्टिव मोड (एक्शन-बेस्ड)

- मोटर एक्शन से जमा हुआ ज्ञान।
- उदाहरण: जूते के फीते बांधना।

2. आइकॉनिक मोड (इमेज-बेस्ड)

- तस्वीरों, डायग्राम के ज़रिए दिखाया गया ज्ञान।

3. सिंबॉलिक मोड (भाषा-आधारित)

- शब्दों, सिंबल, फॉर्मूला के ज़रिए दिखाया गया ज्ञान।
- एजुकेशनल वैल्यू: टीचर्स को एक्शन → इमेज → सिंबल से आगे बढ़ना चाहिए।

B. सर्पिल पाठ्यक्रम

- कॉन्सेप्ट्स को किसी भी उम्र में सिखाया जा सकता है, लेकिन उनकी मुश्किलें बढ़ती जाती हैं।